Roll No. .....
Signature of Invigilator .....

Paper Code
MD-403

पतंजलि विश्वविद्यालय

University of Patanjali

Examination August – 2021

M.A. Darshan, Semester : Fourth
Darshan ; Paper : Third

वेदान्त-मीमांसा-4

Time: 3 Hours **Max. Marks: 70**

नोट : यह प्रश्नपत्र सत्तर (70) अंकों का है जो दो (02) खंडों क, तथा ख में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है।

खण्ड-क
(दीर्घ-उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड 'क' में पांच (05) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिए हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए पंद्रह अंक निर्धारित हैं। किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **(3×15=45)**

1. ब्रह्माधिगम के अनन्तर पुण्य एवं पाप कर्माशयों की क्या गति होती है? वेदान्तदर्शनानुसार वर्णन करें।
2. ब्रह्मलोक को प्रयाण किए उपासक को कार्यब्रह्म की प्राप्ति होती है या कारण-ब्रह्म की? महर्षि बादरायण के मत को प्रस्तुत करें।
3. मुक्ति को प्राप्त हुए जीवात्मा को शरीर के भाव एवं अभाव के संदर्भ में वेदान्त मत को प्रस्तुत करें।
4. मीमांसा के अनुसार विधि के स्वरूप एवं प्रकार का प्रमाणपूर्वक सविस्तर वर्णन करें।
5. वेदान्तदर्शनानुसार मुक्तात्माओं के ऐश्वर्य का प्रमाणपूर्वक उल्लेख करें।

खण्ड-ख
(लघु-उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ख' में सात (07) लघु उत्तरीय प्रश्न दिए गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए पांच अंक निर्धारित हैं। किन्हीं **पांच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **(5×5=25)**

1. वेदान्तदर्शनानुसार ब्रह्म के साथ तादात्म्य जीव की स्थिती का वर्णन करें।
2. विभिन्न अध्यात्म ग्रन्थों के अनुसार अर्चिरादि पथों का समन्वयात्मक उल्लेख करें।
3. मीमांसा दर्शनानुसार परिसंख्या विधि को समझाएं।
4. "निशि नेति चेन्न सम्बन्धस्य यावदेहभावित्वात् दर्शयति च" - इस ब्रह्म सूत्र की सप्रसङ्ग व्याख्या करें।
5. महर्षि बादरायण के अनुसार सूक्ष्म शरीर के स्वरूप एवं स्थिति का प्रमाणपूर्वक वर्णन करें।
6. वेदान्तदर्शनानुसार जीवात्मा का शरीर से उत्क्रमण के समय इन्द्रियों की क्या गति होती है? समझाएं।
7. "आप्रायणात् तत्रापि दृष्टम्" - सूत्र का सप्रसङ्ग व्याख्या करें।

----------x----------